Rise of Hindi Journalism (1900-1947)

हिन्दी पत्रकारिता का उत्थान

Presented by

Dr. Archana Bharti

Guest Faculty, MJMC

Sem-1, Paper- 101

Unit 4 (Journalism)

Date- 20/07/2021

हिन्दी पत्रकारिता का उत्थान

- 19वीं हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास बहुत ही कठिन परिस्थिति में हुआ। इस समय जो भी पत्र–पत्रिकाएं निकलती थी उनके सामने अनेक बाधाएं आ जाती थीं लेकिन इन बाधाओं का सामना करते हुए हिन्दी पत्रकारिता धीरे–धीरे आगे बढ़ती गई।
- सन् **1900 से 1947** तक अर्थात आजादी से पहले तक हिन्दी का समाचार जगत विभिन्न प्रकार के पत्र–पत्रिकाओं से भर गया।

हिन्दी पत्रकारिता का उत्थान

- कला और शिल्प की दृष्टि से यह युग महत्वपूर्ण रहा। वर्ष 1925 के बाद हिन्दी पत्रकारिता में काफी प्रगति हुई। यह समय गांधी का युग था। इस समय सारे देश में राष्ट्रीय जागरण की लहर फैली हुई थी।
- इस समय की प्रकाशित पत्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि साहित्यिक और राजनैतिक पत्रकारिता अलग–अलग हो गयी।

हिन्दी पत्रकारिता का उत्थान

- इस समय देश में 'करो या मरो' का समय था। अतः इस समय देश भर में मर मिटने वाले समाचार पत्रों का जन्म हुआ। इस समय के पत्रों ने न केवल राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व किया बल्कि पत्रकारिता के विकास को तेज गति भी प्रदान की।
- इस काल में हिन्दी के प्रमुख महत्वपूर्ण पत्रकार पैदा हुए। जैसे कि—गणेश शंकर विद्यार्थी, पराडकरजी, वाजपेयी, लक्ष्मीनारायण, बनारसी दास चतुर्वेदी आदि।

हिन्दी पत्रकारिता का उत्थान

इस काल के प्रमुख पत्र निम्नलिखित है–

- उत्तरप्रदेश की राजनीति में जन–जागृति को जगाने वाला साप्ताहिक पत्र **''अभ्युदय''** का जन्म वर्ष 1907 में हुआ। इसे महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय ने निकाला। राष्ट्रप्रेम तथ समाज सुधार में अग्रणी यह पत्र वर्ष 1918 में दैनिक हो गया। सरदार भगत सिंह की फांसी के बाद इस पत्र ने 'फांसी अंक' निकालकर क्रांति मचा दी थी।

हिन्दी पत्रकारिता का उत्थान

- 13 अप्रैल 1907 को नागपुर से **"हिन्द केसरी"** निकला। इसमें लोकमान्य तिलक के प्रसिद्ध पत्र केसरी के लेखों का अनुवाद किया जाता था। इसके सम्पादक पण्डित माधवराव सप्रे थे। इस पत्र के लेख पुराने होते थे फिर भी हिन्दी प्रेमी इसे बड़े ही रूचि से पढ़ते थे।
- 1907 में ही इलाहाबाद से शांति नारायण भटनागर के सम्पादन में **"स्वराज्य"** साप्ताहिक का प्रकाशन हुआ।

हिन्दी पत्रकारिता का उत्थान

- उत्तरप्रदेश के कानपुर से प्रकाशित **''प्रताप''** एक तेजस्वी साप्ताहिक पत्र था। इसे वर्ष 1910 में बाबू गणेश शंकर विद्यार्थी ने अपने कुछ सहयोगियों की सहायता से प्रकाशित किया था। हिन्दी पत्रकारिता में इस पत्र का प्रकाशन एक युगांतकारी कदम था जिसने ब्रिटिश हुकूमत को बता दिया कि जनता को भी बोलने और कहने का अधिकार है। इस पत्र ने सबसे पहले चिट्ठियों के माध्यम से समाचार और शिकायत छापने का शुरूआत किया था।

हिन्दी पत्रकारिता का उत्थान

- वर्ष 1919 में **''स्वदेश''** का प्रकाशन गोरखपुर से पण्डित दशरथ प्रसाद द्विवेदी ने किया। इसी वर्ष जबलपुर से माखनलाल चतुर्वेदी ने **''कर्मवीर''** का प्रकाशन किया। यह पत्र त्याग, तप, आहूति और क्रांति का उद्घोषक था।

- 4 अगस्त 1920 को पण्डित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने कलकत्ता से **''स्वतंत्र''** पत्र का प्रकाशन किया। यह गांधी युग का एक तेजस्वी पत्र था। इस पत्र में राजनीति, व्यापारिक समाचार और सामयिक टिप्पणियां प्रकाशित होती थी। यह पत्र व्यापारी में बहुत लोकप्रिय था।

हिन्दी पत्रकारिता का उत्थान

- 5 सितम्बर 1920 को शिवप्रसाद गुप्ता ने बनारस से दैनिक पत्र **''आज''** का प्रकाशन शुरू किया। यह हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ पत्रों में गिना जाता है।
- 1923 को कलकत्ता से साप्ताहिक पत्र **''मतवाला''** का प्रकाशन हुआ। यह पत्र हिन्दी के हास्य–व्यंग्य आधारित प्रथम साप्ताहिक पत्र था। इस पत्र के प्रकाशन के साथ हिन्दी पत्रकारिता में एक नया प्रयोग हुआ। एक साहित्यिक क्रांति का आविर्भाव हुआ।

हिन्दी पत्रकारिता का उत्थान

- इसी युग में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने लगभग 1930 में काशी से **''हंस''** नामक एक क्रांतिकारी पत्र का प्रकाशन किया। इस पत्र ने साहित्यिक क्षेत्र में एक नई दिशा दी।
- इस प्रकार इस युग में नव बौद्धिक वर्ग ने स्वतंत्रता प्राप्ति और समाज सुधार हेतु पत्रकारिता का सहारा लिया और अनेक पत्र–पत्रिकाओं को प्रकाशित कर देश को एक नई दिशा प्रदान की।